धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मई- 2011

* मूल वाक्य का प्रकृत स्थान
* साथी सेवकों के सत्य धर्म मार्ग में कौन सच्चा मद्दगार हो सकता है?
* नशे मनुष्य को पागल बनाते हैं
* योग्य नेतृत्व की अवश्यकता
* लोकतन्त्र की विजय
* साहस की जीवटता
* जीवन प्रसंग
* शुभ संग्राम

देव वाणी

कुछ मोटे-मोटे पापों से विरत रहकर भी आत्मा विनाश से नहीं बच सकता

प्रत्येक धर्म मत के अधिकाशं लोगों को छोड़कर कुछ लोग जो कई मोटे-मोटे पाप नहीं भी करते, प्रकृत धर्म के विचार से उन की अवस्था भी क्या है? औरों को छोड़ कर हिन्दुओं में से ही जो लोग घर और परिवार आदि छोड़कर वैरागी, योगी और सन्यासी आदि बन जाते हैं, उन में से उन अधि कांश साधुओं को छोड़कर कि जो महा धूर्त होते हैं, जो भंग, सुलफा, मद, अफीम आदि नशों का सेवन करते हैं, जो औरों की बहू बेटियों को खराब करते हैं, जो रसायन आदि के नाम से तरह-तरह की प्रवंचना करते हैं, जो अनेक प्रकार के झूठ बोलते हैं, जो अश्लील बातें करते हैं, जो आपस में भी एक दूसरे की चोरियां करते हैं, जो परस्पर "अप्रकृतिक" कर्म करते हैं, जो कई बातों के विचार से कई गृहस्थियों की अपेक्षा भी बहुत घृणित और नीच जीवन व्यतीत करते हैं। उन गिनती के "साधुओं" पर ही दृष्टि फेरो, कि जो इस प्रकार के पापों मे लिप्त नहीं है, और जो पुरानी विधि के अनुसार अपने चित आदि की वृत्तियों के रोकने का भी साधन करते हैं और जो ऐसे साधन से अपने चित को स्थिर करके एक प्रकार का आन्तरिक सुख भी सम्भोग करते हैं, और सिद्ध पुरुष समझे जाते हैं। यदि उनकी अवस्था को सन्मुख लाओ, तो भी जीवन तत्व की ज्योति में तुम स्पष्ट रूप से देख सकते हो, कि यद्यपि उपरोक्त प्रकार के पापों से विरत जन पृथ्वी में बहुत थोड़े ही मिल सकते हैं, फिर भी जहां कहीं वह वर्तमान भी हैं, वहां वह इन पापों से बचे रह कर भी न तो जीवन सम्बन्धी विकास और विनाश के तत्वों का ही कोई ज्ञान रखते हैं, कि जो उनकी उच्च गति और विकास के लिए आवश्यक हैं। ऐसे जनों में भी कितने ही तो केवल धन, सम्पति, इन्द्रिय सुख, मान पद आदि को ही लक्ष्य रखकर जीते हैं, और विकासकारी ध र्म शक्तियों से विहीन रह कर अपने आत्मा की जीवनी शक्ति को खोते रहते हैं। और कितने ही जो "साधु" बनकर जप, ध्यान और योग आदि के साधन में रत रहते हैं, वह ध्यान आदि का सुख लेकर भी (जिस प्रकार और कितने ही जन रसना आदि का सुख भोग लेते हैं।) विकासकारी धर्म के सच्चे भावों से खाली रह कर अपने जीवन को जहां एक ओर विकसित नहीं कर सकते, वहां दूसरी ओर ऐसी अवस्था में उपरोक्त मोटे मोटे पापों से बचे रह कर भी अपने आत्मा के जीवन को विनाश से नहीं बचा सकते और एक दिन (चाहे वह दिन अन्य पापियों की अपेक्षा कुछ काल दूर जा कर आवे) सर्वथा नष्ट हो जाते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 5

मई - 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मूल वाक्य का प्रकृत स्थान

धर्म समाजों की रूप रेखा में नेचर की प्रत्येक वस्तु की तरह परिवर्तन होता रहता है। किसी मत की स्थापना के समय वह कुछ और होती है, फिर समय पाकर कई बार 2 - 4 सौ या इससे भी अधिक समय के बाद बहुत कुछ बदल जाता है।

महात्मा बुद्ध पक्के शाकाहारी थे। उनकी पशु पक्षियों की जानें बचाने की सुन्दर गाथाएं हैं। उन्होंने पशु वध को रोकने के लिए अपना सिर बलि बेदी पर रख कर एक राजा को पशुओं की बलि देकर धर्म कमाने की क्रिया की भयानकता को दर्शाया और बलि देने के द्वारा यज्ञ करने को रोका। आज माननिय दलाई लामा साहिब उनकी गद्दी के वारिस हैं, उनकी रसोई में प्रतिदिन कई मन मांस पकता है। शुरू जमाने में हर बोधी या बुद्ध भिक्षु को शाकाहारी होना जरूरी था। अब कोई विरला ही बुद्ध का पैरोकार शाकाहारी होगा। अधिकतर लामे वा बोद्धी प्रचारक सब मांसाहारी ही मिलते हैं।

सिक्ख धर्म की रूप रेखा गुरू नानक देव जी के समय और थी, जो समय पाकर छटी और दसवीं पातशाही के समय तक और हो गई। समय के साथ परिवर्तन का होना अवश्यक है।

गांधी जी के समय गांधीवादियों की रूप रेखा वा उनके मुल्य और थे, उनके जल्दी ही बाद हालात और के और ही हो गए। गांधी जी के मुल्य और कीमतें लगभग बदल गई हैं और लोप हो गई हैं।

ऐसा होना कुदरती है। जो बोध, जो एहसास और तड़प उक्त सात्विक महान हस्तियों के भीतर था, वह आम इन्सान, जो नीच सुख अनुरागी और घृणाकारी होते हैं, उनके भीतर नहीं होती, इसलिए वह बदलते जाते हैं और पतित होते जाते हैं। इस प्रकार सुख अनुरागी मनुष्य प्रकृति के लिए यह अन्तर आना अवश्यक है।

देव धर्म वा देव समाज भी धर्म समाज है। इसके संस्थापक अद्वितीय हस्ती देवात्मा हैं। देवात्मा का रूप, स्थान, बोध और दुनियां मनुष्य की समझ सोच से बहुत कुछ परे की चीज़ है। तुच्छ और दुर्बल मनुष्य का उन मुल्यों से परे होना या उन्हें tamper करना अति भयानक और दुखदाई है। इस महा भयानक ख़तरे से पूर्ण सतर्क और जाग्रित रहना प्रत्येक गुरू के सच्चे, महा उपकृत श्रद्धावान के लिए अति अवश्यक है। परम पू० भगवान देवात्मा और मनुष्य के बीच कितनी बड़ी खाई है, कितना बड़ा अन्तर है, इसके सम्बन्ध में पू० भगवान ने इस प्रकार फरमाया है: -

"जिस प्रकार पशु जगत के प्रत्येक जीव से प्रत्येक उन्नतशील दिमाग़ी शक्तियां रखने वाले मनुष्य की अपनी इन शक्तियों के कारण विशेषता वा श्रेष्टता

है अर्थात वह अपनी आत्मा में इन विशेष शक्तियों के विकास के कारण पशु जगत के प्रत्येक जीव से ऊपर की श्रेणी का जीव है, उसी प्रकार मनुष्य जगत के प्रत्येक मनुष्य से देव शक्तियां रखने वाले श्री देव गुरू भगवान की अपनी देव शक्तियों के विकास के कारण विशेषता वा श्रेष्टता है अर्थात वह अपनी आत्मा में उन विशेष शक्तियों की प्राप्ति के कारण मनुष्य जगत से ऊपर की श्रेणी के आत्मा वा देवात्मा हैं"।

परम पू० भगवान बाह्यक स्वरूप अवश्य मनुष्य जैसा ही रखते हैं परन्तु उनके दिल, दिमाग वा आत्मा की शक्तियों के कारण उनका हम नीच सुख अनुरागी मनुष्यों की सारी नसल के साथ योग्यताओं का ही नहीं नसल (species) वा श्रेणी का अन्तर है। जितना मनुष्य का पशु से अन्तर है, उतना ही देवात्मा का मनुष्य से बहुत गहरा वा विशाल अन्तर है। इसलिए मनुष्य की ओर से उनकी अद्वितीय शिक्षा रूप वा कारज सम्बन्धी सारी प्रकृत परम्परा (रीति) के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भी दख़ल, छेड़छाड़ या हरकत महा भयंकर, महा हानि और नाश से खाली नहीं हो सकती। देव शक्तियों या सत्य और शुभ अनुरागों की दुनियां, नीच सुख अनुरागियों की दुनियां वा उसकी लीला में आकाश पताल का अन्तर है। जो सदा सदा याद रखने योग्य है।

परम पू भगवान देवात्मा का देवरूप, प्रकृत रूप में, केवल अक्ल से दिखाई नहीं दे सकता, उसकी कुछ साधारण समझ तो पड़ सकती है, देवात्मा के देव रूप के प्रकृत दर्शन, उनकी रोशनी के भीतर ही हो सकते हैं। उन तक रसाई किसी विद्वान की तो क्या होनी थी, उनके मिशन के सेवक, कर्मचारी वा उच्च पदधारी की भी अकसर कतई नहीं हो सकती। सारी समाज में कोई विरला ही सौभाग्यवान जन होगा, जो इस ज्योति तक ठोस रसाई के नियम को पूरा करने की सामर्थ्य प्राप्त कर सके, इसलिए परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है:-

"मैं अज्ञात हूँ, मैं परित्यक्त हूं" इसी कारण उनके परलोक गमन पर सारी समाज ने उनकी शव यात्रा के पीछे इस वाक्य का उचारण किया था "हमने तुमको नहीं पहचाना, हमने तुमको नहीं पहचाना" ।

जब तक मनुष्य को अपनी "मैं" के, अपने अंह, अपनी अपनत्व के कि "मैं ठीक हूं" की महा भयानक और महा प्रबल शक्ति का किसी अंश सच्चा बोध नहीं होता, और वह किसी अंश नहीं घटती, तब तक मनुष्य को न अपनी असीम नीचता वा तुच्छता का कोई पता चलता है, और न ही परम पू० भगवान देवात्मा के देव रूप की प्रकृत महानता, असीम ऊंचाई का कोई मामूली, सच्चा आंकलन या आभास हो सकता है। इस बोध के बिना हम मनुष्य आत्मा अपनी गहरी नीचता को नहीं देख सकते। हम कितने नीच, दुष्ट वा मलीन हैं, महा अपराधी, अशिष्ट, अश्लील, पिशाच, अधम, दुर्बल वा अन्धकार वासी हैं, इस पहाड़ जितने बड़े सत्य को भी साफ साफ नहीं देख सकते। अपनी इस असली औकात को भी न देख सकते हैं, न अनुभव कर सकते हैं। अपने असल रूप को भूले रहते हैं, हम जो कुछ अपने आपको समझते हैं, हम वह कुछ हरगिज़ हरगिज़ नहीं हैं, जो कुछ वास्तव में हम है ऐसे बिल्कुल नहीं और जो हम हैं, वह हमें दिखाई नहीं देता। परम पू० भगवान देवात्मा ने हमारे प्रकृत रूप के विषय मे फरमाया है:-

"मनुष्य अपने भीतर के नीच अनुरागों वा नीच घृणाओं के कारण तरह तरह के झूठ घड़ता है और उनकी पैरवी करके झूठा, मक्कार, धोखेबाज, जाल साज, ठग, बेवफा बद अहद, कर्तव्य शिकन

आदि बनता है और उनके भिन्न तरह तरह के पापों, जैसे चोरी, बदचलनी, रिश्वतखोरी, जुल्म, दंगे फसाद, लूटपाट, डकैती और खून आदि करने के लिए भी तैय्यार हो जाता है"

यह है हमारी प्रकृत तस्वीर जो पूर्ण सत्य के आशिक (अनुरागी) ने चित्रित की है, जो हमें बहुत ज़ोर लगाकर भी नज़र नहीं आ सकती और "मैं" के प्यार कारण सदा सामने नहीं रह सकती। देवात्मा ने फरमाया है: -

"मनुष्य सब पागल हैं जो पागलखाने में बन्द हैं, वह अधिक पागल है, दूसरे कम पागल हैं।" यह हमारी औकात है।

"मैं" के प्यार से कोई विरला मनुष्य ही रहित हो सकता है। हम सब इस महा रोग के कोढ़ी हैं। मात्रा का फर्क हो सकता है। "मैं" के आशिक होकर हम चार प्रकार के लक्षण प्रगट करते हैं। हम अन्धे हैं, हम पागल, झूठे, उल्टादृष्टा है। जहां अंह हैं, वहां घमंड, स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता और घृणा की तरह उक्त चारों अवस्थाओं का होना भी ज़रूरी है, यह हमारा प्रकृत रूप है।

अंह अनुराग को रखकर हमारे लिए देव रूप की सोझी पूर्ण असम्भव है। अपनी सच्ची सोझी भी असम्भव है। हमारी अवस्था महा तरस योग्य वा कृपा - पात्र है। देव बोधों का सच्चा एहसास वा आकलन हमारी समझ से बहुत दूर की बात है। हम मनुष्यों की अवस्था के परम पू० भगवान देवात्मा के सम्पर्क में आने के कड़वे और दुखदाई अनुभव पहले भी होते रहे हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने अपने अपराध स्मरण के पत्रों में उनका अद्वितीय वर्णन किया हैं। उन्होंने अपने मनुष्यात्मा के रूप को और परम पू० भगवान देवात्मा के देवरूप को अलग अलग देखने का और उनके बीच जो असंख्या मीलों का अन्तर है, उसको दर्शाने के लिए अपने अनुभव द्वारा महान कृपा की है। उनके देवात्मा की ज्योति शक्ति भरे लेख और अनुभव हम तुच्छ आत्माओं की वचित्र रहबरी सदा करते रहेंगे।

एक बार एक पुराने कर्मचारी और कौंसलर ने (पू० भगवान के देव लोक गमन के कुछ वर्ष बाद) जो उच्च से उच्च पद पर भी आसीन रहे थे, भगवान रचित ग्रन्थों को छपवाते समय कुछ शब्दों की तबदीली करके अपनी मर्ज़ी से छाप दिए थे। इस कारण एक और महान और विख़्यात कर्मचारी, कौंसलर और विचारशील मनुष्य ने इस क्रिया के लिए बड़ा दुख अनुभव किया था, क्योंकि उनको क्या अपने रूप की और क्या पूजनीय देवरूप की कहीं अधिक सोझी थी और उन्होंने फरमाया था कि यह अपराध जिन हाथों ने किया है, वह रखे जाने के योग्य नहीं, इतनी तड़प उन्होंने अनुभव की थी। अपने आप में वह दोनों कर्मचारी बहुत सम्मान के पात्र थे।

पू० भगवान ने मनुष्य का रूप पेश करते हुए यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य वह है जो झूठ और पाप का साथी हो और जो शुभ और सचाई का गला घोंटने वाला हो। हम मनुष्य आत्मा अपनी मूल प्रकृति से शुभ और सत्य के विरोधी अर्थात शत्रु हैं। यह सचाई सदा ग्रहण करने योग्य है।

मूल वाक्य जब से सेवकी की प्रतिज्ञाओं का अंग बना है उस समय से ही मनुष्य सेवकों की ओर से उसका विरोध हुआ है। कुछ एक जो विख़्यात सेवक थे उन्होंने उस प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करने में झिझक दिखाई थी। इसलिए वह सेवक नहीं रहे थे। कुछ एक के विचार ऐसे थे कि कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति मूल वाक्य पर या देव स्तोत्र पर विश्वास नहीं कर सकता। वह व्यक्ति चाहे कितने ही बड़े सेवक रहे हों, वह यकीनन अपने रूप की वा देवात्मा के रूप की कोई

साफ सोझी नहीं रखते थे।

मूल वाक्य के होने वा उसके स्थान वा दर्जे की चर्चा पू० भगवान की वर्तमानता में, उनके आख़री समय तक भी होती रही है। सत्य वा लोक प्रियता, वा लोक लाज इकट्ठे नहीं चल सकते। (हर दिल अज़ीज़ी) लोक प्रियता अंह भाव का ही बड़ा लक्षण है, लोक प्रियता, सत्य अनुराग, विशेषकर सत्य स्पष्ट भाषण, सत्य समर्थन और सत्य प्रचार के अनुराग की साथी वा समर्थक नहीं रह सकती।

गुरू महाराज ने मूल वाक्य की चर्चा के समय सन 1927 के लगभग आख़िर में फरमाया था:-

"जो सत्य और हित को मिटा देना चाहते हैं, वह राक्षस बन जाते हैं (और स्वंय मिट जाते हैं।) मूल वाक्य के सम्बन्ध में भगवान देवात्मा ने फरमाया कि वह प्रत्येक के लिए है। चाहे कोई सेवक हो या सहायक, श्रद्धालु (श्रद्धालुओं को थोड़े पापों की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है)। मैं इन्कलाब ला रहा हूं, पहले बहुत सारा आ चुका है, अभी और लाना है।

जिन सौभाग्यवान सेवकों को परम पू० भगवान देवात्मा के देवरूप की कुछ भी मनोहर झलक दिखाई देती है, उनको मूल वाक्य से और देव स्तोत्र से सुन्दर, कीमती और पूज्यनीय कुछ और नज़र नहीं आएगा। जैसे इंगलैंड के ताज में कोहनूर का स्थान है, वही स्थान सेवकी की प्रतिज्ञाओं में मूल वाक्य की प्रतिज्ञा है। यह सब की सरताज प्रतिज्ञा है। उसके बिना देवात्मा की सेवकी की कोई भी अहमियत रह नहीं जाती। हमारी मनुष्य प्रकृति को अपने अंह की भूल भुलैयों से बेहद दुखी होने, ख़ौफ खाने और बचे रहने के लिए अति सतर्क रहने की अवश्यकता है।

हमारी यही मनुष्य प्रकृति हमें लोक लाज, लोक प्रियता के आशिक बनाकर हमारे सामने ऐकाकारी की, जय ध्वनि की, देव स्तोत्र के गान की, वा देव आरती के महत्व को खो देती है और हमें सत्य विश्वासों से और कंगाल बनाकर एक घृणित कारटून बना सकती है। इस महा दोषी और भयानक लोक लाज, लोक प्रियता भरी अंह की प्रकृति हमें ईश्वर या मिथ्या उपास्यों के विरूद्ध मुंह तक खोलने की हमारी सारी स्वर्गिय आज़ादी ख़त्म कर देती है और ईश्वरके विरूद्ध पुस्तकों को हम छाती ठोकर पेश करने के स्थान पर, उन्हें घर के कोनों में छुपाने के फ़िकर के शिकार हो जाते हैं। यदि ऐसा कुछ करके देवात्मा को अपने गुरू और अपने आपको उनका शिष्य समझने की हिमाकत करते हैं तो हमारे से अन्धा, मूर्ख, थोथा विश्वासी और कौन हो सकता है। इसी भयानक लोक प्रियता वा हर दिल अजीज़ी का शिकार होकर हम सब विकास क्रम को ही नकार कर और मिथ्या उपास्यों का सत्कार करने के फिकर के कारण उन मिथ्या उपास्यों को भी विकास क्रम की शरोमणी देन, देवात्मा के बराबर कतार में खड़े करने की बेबसी का शिकार हुए बिना कैसे रह सकते है और निजी परलोक सम्बन्धी अनुभव का झूठ भरा मनघड़न्त समर्थन घड़ने के लिए मजबूर हो सकते हैं।

एक बार श्रीमान निर्मल सिंह जी कोहारवाला ने देवात्मा का और एक और धर्म समाज के बानी का मुकाबला भटिंडा में पब्लिक विशाल सभा में किया था। श्रीमान जी ने बड़े उत्साह के साथ भगवान की महिमा ब्यान करके बड़ी शानदार जीत प्राप्त की थी। परन्तु जब गुरू महाराज को पता लगा तो उन्हें गहरा आघात लगा, उन्होंने फरमाया कि हमारे सेवक ही हमारा अपमान करते हैं। देवात्मा का किसी मनुष्यात्मा से क्या मुकाबला हो सकता है। यदि मुकाबला करना ही था हमारे किसी सेवक से ही रख लेते, आदि।

किसी भी मिथ्या उपास्य के साथ देवात्मा की तुलना या बराबरी पू० भगवान का घोर अनादर और

अपमान है, यह पू० भगवान के लिए महा आघात का कारण है। और उनके प्रति विश्वास और श्रद्धा से वहीन पन का वा दिवालिया पन का प्रतीक है। हम मनुष्यों की प्रकृति भ्रान्ति का शिकार होने के लिए है।

पूज्यनीय मूल वाक्य (देव स्तोत्र वा देव आरती भी) परम पू० भगवान देवात्मा के देवरूप का शाब्दिक चित्रण है। मूल वाक्य वा देव स्तोत्र वह शीशा हैं, जिसमें परम पू० भगवान देवात्मा के देवरूप का अद्भुत सूरज निहित है। यह मूल वाक्य वह कान है, जिसके कण कण से देवरूप खोजा जा सकता है। यह शिरोमणी शब्द वह कूजा है, जिनमें देव अनुरागों (देव शक्तियां) के दरियाओं से भरा समुन्द्र समाया हुआ है। देवात्मा के अद्भुत देव रूप को दर्शाने वाली महान सचाईयां इसमें निहित हैं। इसमें देवात्मा का देव ज्योति वा तेज मयी अमृत निहित है। मूल वाक्य (देव स्तोत्र) को उच्च दर्जे की श्रद्धा की ज्योति के अन्दर मनन करने के बिना, चिन्तन के बिना, गहराई से उसको देखने के बिना, देव रूप की समझ ही नहीं आ सकती। उसके प्रकृत रूप के दर्शन होने सम्भव ही नहीं। देवरूप के साथ सम्बन्ध होना तो असम्भव ही है, देव रूप की कोई सच्ची पूजा नहीं हो सकती। कोई देव के दर्शनों रूप की सच्ची झलक दिखाई नहीं दे सकती। उच्च दर्जे के देव प्रभावों की प्राप्ति नहीं हो सकती। देवरूप की विलक्षणता की सुन्दर, मोहनी छवि के दर्शनों के बार बार होने से देवरूप के साथ सच्चा और ठोस सम्बन्ध स्थापन करने वाले अटल विश्वास, श्रद्धा, कृतज्ञता और आकर्षण के भाव पैदा होते और बढ़ते हैं नहीं तो देव रूप के साथ सम्बन्ध स्थापना की महत्वता तक ही लोप हो जाती है। जिस सम्बन्ध से हमारी आत्मिक मौत और रक्षा और आत्मिक विकास का नेचर मूलक अकाट्प सम्बन्ध है, उसकी ज़रूरत भी अनुभव नहीं हो सकती। जिस सम्बन्ध से मनुष्य का लक्ष्य नज़र आ सकता है, वह न नज़र आ सकता है और न हमारा वह लक्ष्य बन सकता है। हमारा विपथगामी रहना अन्धेरे में जीना, अन्धेरे में मरना ज़रूरी है।

मूल वाक्य में विश्वास के बिना देवात्मा को गुरू समझना वा दर्शाना पूर्ण निरर्थक वा अर्थ हीन है। मूल वाक्य को तजकर देवात्मा की कोई पूजा निरर्थक और असम्भव है। कोई उच्च दर्जे की ज्योति शक्ति की प्राप्ति असम्भव है। कोई नीच जीवन मिटना वा उच्च जीवन प्राप्त करना असम्भव है। यह लक्ष्य और र्माग बनना ही असम्भव है, इसकी ज़रूरत तक महसूस होना भी सम्भव नहीं।

देवात्मा के सेवक देवरूप के पुजारी हैं। "देव - आत्मा", के दो अक्षरों के, उनके स्थूल शरीर के या उनकी बाह्यक फोटो के या स्टैचू के पुजारी नहीं है, वह मूल वाक्य में निहित देव शक्तियों के देव अनुरागों द्वारा निर्मित देव रूप के उपासक हैं। जिनका चित्रण गुरू की फोटो में नही, मूल वाक्य में है। पूर्ण हित पर कुर्बान होने वाले, पूर्ण सत्य पर कुर्बान होने वाले, देवात्मा ने अपनी अद्भुत ज्योति में मूल वाक्य की सर्जना और शोधन किया है। उसके सत्कार में ही देवरूप का सत्कार है, उसको विसार कर हम देवात्मा को विसारते हैं, निरादर करते हैं।

मूल वाक्य के बिना न देव शक्तियों, न देव ज्योति, देव तेज की महानता वा कीमत समझ आ सकती है। मूल वाक्य को हृदय में पूरा पूरा उतारे बिना, देवात्मा का जो विलक्षण, अद्भुत, एक मात्र शरोमणी निराला रूप है, उसके किसी अंश मात्र भी सच्ची और प्रकृत पहचान नहीं हो सकती है, जिस पहचान के बिना सारे का सारा मनुष्य मात्र आत्मिक पक्ष से कंगाल रहने के लिए बेबस है।

बलदेव सिंह

साथी सेवकों के सत्य धर्म मार्ग में कौन सच्चा मद्दगार हो सकता है?

साथी सेवकों का सत्य धर्म मार्ग में सच्चा मद्दगार बनने के लिए जिन जिन नियमों का पूरा होना आवश्यक है, वह यह है:-

ऐसा जन भगवान् देवात्मा की सत्य शिक्षा का अच्छा पंडित हो, और दुनिया के कुल प्रचलित मतों की फिलसिफियों का अच्छा ज्ञान रखता हो, ताकि दोनों का मुकाबला करके वह एक ओर साथी सेवकों को असत्य के मार्ग से खबरदार कर सके, और दूसरी ओर सत्य पथ का पथिक बना सके। मैं एक बार हाईकोर्ट में खड़ा था। मेरे सामने एक जन से दूसरे जन से एक खास जज की कोर्ट का पता पूछा, उसके कोर्ट के कई जज थे, और कुछ जजों की कोर्ट ऊपर की मंजिल में थी। वह बताने वाला जन खुद गुमराह था, अज्ञानी था, लेकिन अपनी अज्ञानता बताने में अपनी हेठी समझता था, इसलिए उसने पूछने वाले जन को उलटे मार्ग पर डाल दिया, और उसे बहुत परेशान कर दिया। इसी प्रकार मैंने एक प्रदेश में एक जन से किसी दूसरे जन के घर का पता पूछा, बहुत शोक का विषय है, कि उसने मुझे ऐसे उलटे मार्ग पर डाल दिया, कि मैं बहुत परेशान हुआ, और मेरा बहुत सारा समय नष्ट हो गया। धर्म जगत् में तो विपथगामी बनाने वाले एक या दो मत नहीं हैं, किन्तु दुनिया के सारे के सारे मत और मज़ाहब गुमराह कुन है। देव ज्योति से विहीन हो कर उन्होंने आत्मा का रूप ही नहीं देखा, न उन्होंने आत्मा का विनाश और विकास देखा, न उसका सच्चा और श्रेष्ठ लक्ष्य देखा। इसलिए उन्होंने यह शिक्षा दी, कि आत्मा की मृत्यु होती ही नहीं, चाहे वह कैसी भी गतियां करे। यही कारण है, कि मनुष्य 'शुतर बे मुहार' की न्याई नीच गतियों में लग गए हैं। फिर जब उनको यह भी कहा गया कि तुम्हारे गुनाह माफ किए जाएंगे, तब तो क्या था, पाप जीवन का दौर चलने लगा, और मिथ्या पाप का राज्य फैल गया। भगवान् देवात्मा ने यह आत्म अन्धकार मिटा दिया, आत्मा का सच्चा रूप दिखाया, नीच अनुरागों और नीच घृणाओं में आत्मा की मौत दिखाई, उच्च अनुरागों वा उच्च घृणाओं में आत्मा का जीवन दिखाया। नाना सम्बन्धियों से सम्बन्ध काटना सच्चा लक्ष्य नहीं दिखाया, उसके विपरीत भगवान् देवात्मा ने यह शिक्षा दी, कि नाना सम्बन्धों में उच्च भावों से जुड़कर अपने आत्मिक जीवन को उन्नत करना मनुष्यात्मा का सच्चा लक्ष्य है। इस प्रकार की सत्य शिक्षा से ज्योतिर्मान होकर प्रचलित मतों की मिथ्या शिक्षा का बोधी होकर ही कोई जन अपने साथी सेवकों का सत्य धर्म मार्ग में सच्चा मद्दगार हो सकता है।

इसके भिन्न वही जन अपने साथी सेवकों का सत्य धर्म मार्ग में सच्चा मद्दगार हो सकता है, जिस ने उस मार्ग पर चलने की खुद कुछ न कुछ सामर्थ्य पाई हो। यह सामर्थ्य क्या है? यह सामर्थ्य उच्च आत्मिक अवस्था का नाम है। जब कोई जन कई प्रकार के पापों के सम्बन्ध में जहां तक बोधी और त्यागी हो चुका हो, तब वह वहां तक अपने साथी सेवकों का मद्दगार हो सकता है, उससे अधिक नहीं । इससे ऊपर तो वही जन मद्दगार हो सकता है, कि जिसने अपने जीवन में एक दूसरे प्रकार के परोपकार के भावों को पैदा किया हो, परन्तु ऐसे जन की मद्द भी वहां तक ही पहुंच सकती है, जहां

तक उसके उच्च भावों की पहुंच हो।

जिसके भीतर सच्ची श्रद्धा है, वह औरों के भीतर सच्ची श्रद्धा पैदा कर सकता है। जिसके भीतर सच्ची कृतज्ञता है, वह औरों को कृतज्ञ बना सकता है। जिसके भीतर पर सेवा का भाव है, वह औरों के सम्बन्ध में पर सेवानारी बना सकता है। जिसके भीतर सच्चा हानि परीशोध का भाव प्रबल रूप में वर्तमान हो, वह वहां तक ही औरों का भला कर सकता है, अर्थात् उन्हें हानि परिशोध के साधनों में लगा सकता है। यह स्मरण रखना चाहिए, कि जो भाव जिसके भीतर नहीं है, वह उस भाव को किसी और जन के हृदय में उत्पन्न नहीं कर सकेगा। श्रद्धा विहीन जन किसी और को श्रद्धावान नहीं बना सकता, कृतघ्न जन किसी को कृतज्ञ नहीं बना सकता। महा स्वार्थी जन किसी को परोपकारी नहीं बना सकता। इस प्रकार एक व दूसरे आत्मिक रोगों से रोगी जन ऐसे किसी और आत्मिक रोगी को सच्ची शफा नहीं दे सकता। जितना पानी कुएं में है, उससे अधिक नाली या चौबच्चा में नहीं आ सकता। इस सच्चाई से वंचित जन ऐसे आत्मिक रोगों के विरूद्ध प्रचार करते हैं, कि जिसके वह आप रोगी हैं। खुद धन के दास होकर धन के दासत्व के विरूद्ध प्रचार करते हैं। खुद काम वासना के गुलाम जन काम वासना के विरूद्ध प्रचार करते हुए देखे जाते हैं। ऐसे जनों का यह विश्वास है, कि कपटता भी कोई धर्म का अंग है। कपटता तो धर्म जीवन के लिए संखिए का काम करती है। सरलता ही धर्म जीवन का महा सुन्दर अंग है। जो इससे विहीन है, वह एक बहुत ही कीमती अंग से खाली है। जो इस भाव के खोने में हाथ धोकर लगे हुए हैं, वह मूर्ख जन नहीं समझते, कि वह अपना और औरों का नाश कर रहे हैं। बाकी रहा यह सवाल, कि हमें किस प्रकार पता लगे, कि हमारे जीवन में कोई उच्च व सात्विक अंग वर्तमान हैं, इसका सबूत लेने के लिए कहीं और जगह जाने की जरूरत नहीं। इसका परिचय मनुष्य के अपने पास वर्तमान है। यदि कोई उच्च भाव किसी के भीतर वर्तमान हो, तो वह उस जन की चिन्ताओं और क्रियाओं के द्वारा फल पैदा कर देगा और अगर वह भाव प्रबल हो, तो बार बार उसके जीवन से वह फल पैदा करेगा। श्रद्धावान जन अपने श्रद्धेय भगवान् पर एक बार नहीं बार बार बलिहार हो जाएगा। कृतज्ञ एक बार नहीं, किन्तु बार बार अपने उपकारियों पर बलिहार हो जाएगा। पर सेवाकारी जन एक बार नहीं, किन्तु बार बार औरों की सेवा के लिए बलिहार हो जाएगा। पर के लिए स्वार्थ कर त्याग परोपकार का चिन्ह है। तब वही जन अपने साथी सेवकों का सत्य धर्म में सच्चा मद्दगार हो सकता है, जो सच्चा आत्म ज्ञानी हो, और सच्चा परोपकारी वा उच्च जीवनधारी हो।

(पी०वी०कनल)

जिसको हमारी समाज (Society) में विजेता (या बड़े) समझा जाता है, उनमें से अधिकतर वही जन होते हैं, जो नियमों की अवहेलना करते है या नियमों को मलियामेट करते हैं। वास्तव में वह सोचते हैं कि नियम तो मूर्खों या हारने वालों के लिए होते हैं।

नशे मनुष्य को पागल बनाते हैं

मुझे एक चण्डीगढ़ के ही गांव में जाने का मौका मिला, वहां एक भद्र स्त्री को मिलने का मौका मिला, जिसका गांव वालों से काफी सम्बन्ध है और वह उनके लिए कुछ न कुछ सेवा के काम भी करती रहती है, उसने बताया कि गांव के अधिकतर नौजवान और बच्चे नशों में डूबे हुए हैं। यदि माता पिता को कोई बताता है, तो वह विश्वास नहीं करते, परन्तु जब वह मरने लगते हैं, या नशों के लिए घर से चोरी करते हैं या बाहर से चोरी करते हैं तो पुलिस द्वारा काफी बार पकड़े भी जाते हैं तब माता पिता को समझ आती है, परन्तु तब तक बहुत देर हो गई होती है। गांवों में नशों अर्थात अफीम, कोकीन, जर्दा आदि कई प्रकार के धन्धे चल रहे हैं और पुलिस की नोक के नीचे चल रहे हैं, यहां तक कि अब स्त्रियां भी इस धन्धे में धड़ल्ले से लगी हुई हैं। हमारे बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं, और ऐसा भविष्य जो नशों में दिन पर दिन डूब रहा है।

नशों का पागलपन कुछ भी होश रखने वाले जन को दिखाई देता है, यहां तक कि नशे करने वाले भी इसको बुरा वा हानिकारक समझ सकते हैं, पर उसकी लत नहीं छूटती। यदि drugs लेने वालों को नशा नहीं मिलता, तो उनकी बेबसी, चीखो पुकार, शरीरिक कष्ट देखे नहीं जाते, परन्तु मनुष्य के सुख अनुराग ही क्या हुए, जो उसे अपनी हानि देखकर भी उसकी तृप्ति करने के लिए बेबस न कर दें।

मनुष्य सुख अनुरागी ही नहीं, नीच सुख अनुरागी है। नशों का एक नीच अनुराग ही नहीं परन्तु मनुष्य तो तरह तरह के नीच सुख अनुरागों के नशों में धंसता चला जा रहा है।

मान बड़ाई का नशा जब चढ़ता है, तो मनुष्य पागल हो जाता है, वह उचित अनुचित का भेद भूल जाता है। कुर्सी का नशा मान बड़ाई का ही नशा है, परन्तु इस नशे में पागल मनुष्य अपने को ही हानि नहीं पहुंचाता, दूसरों पर भी जुलम ढाता है। कुर्सी को लेने और फिर उसे कायम रखने के लिए किस किस प्रकार के षड़यन्त्र रचे जाते है, दूसरों पर झूठे दोषारोपण किए जाते हैं, घटिया मनुष्यों की चापलूसी की जाती है। एक एक मनुष्य अपनी महिमा स्वयं ही गाने लगता है। अख़बारों और पत्रिकाओं में अपनी महिमा बढ़ चढ़कर लिखवाई जाती है। अपनी कुर्सी बचाने के लिए चाहे देश, समाज और संस्थाएं भाड़ में जाएं, उसकी कोई परवाह नहीं रहती। यही कारण है कि राबड़ी देवी जैसी साधारण औरत एक बहुत बड़ी स्टेट का राज चलाने लगी थी। लालू प्रसाद अपनी कुर्सी बचाने के लिए क्या क्या पापड़ नहीं बेलता रहा, देश के हितकर्ता होने का स्वांग भरने वाले निजी स्वार्थ के कारण क्या क्या ढोंग नहीं करते। अब यह ऐसा नशा है कि जिसको दिखाने वा समझाने वाला कोई नहीं। यह भी उसी प्रकार घातक है, जिस प्रकार शराब का नशा। मान सम्मान पर चोट लगने से भी आत्म हत्याएं होती हैं।

इस सुख अनुराग के बढ़ने से ईर्ष्या और द्वेष की उत्पति हो जाती है। अपने से गुणधारियों, योग्यताएं रखने वालों के प्रति ईर्ष्या जन्म ले लेती है। फिर ऐसा मनुष्य इस कोशिश में रहता है कि योग्य जनों को काम करने का मौका ही न दिया जाए, उन्हें अपने रास्ते से किसी तरह हटाया जाए, उसके लिए चाहे निकृष्ट जनों के हाथों में ही क्यों न खेलना पड़े। फिर द्वेष की भावना भी बढ़ने लगती है, तो अपने से योग्य जनों को नष्ट करने की योजनाएं बनने लगती हैं, यही कारण है कि आज ईमानदार सच्चे और योग्य जन देश की राजनीति में आगे नहीं आते। यही हालत समाजों और

संस्थाओं की है। निज हित के आगे देश हित, समाज हित, संस्था हित पूर्णत: लोप हो जाते हैं। बल्कि निज हित की बलि पर देश और समाजों के हित को चढ़ा दिया जाता है। निज हित ही प्रधान और मुख्य बन जाता है। यह नशा दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है। पूजनीय भगवान की रोशनी के बिना इसका ज्ञान असम्भव है। ऐसी रोशनी से हम देवात्मा के ज़हूर को जानने वाले भी वंचित हैं, तो बाहर के लोगों का तो क्या कहना?

धन के नशे की गुलामी भी कम ख़तरनाक नहीं। एक एक जन धन क़माना ही अपना लक्ष्य बना लेता है, फिर सन्तुष्टि लाखों करोड़ों से भी नहीं होती। उसकी सेहत ख़राब हो जाए, उसकी परवाह नहीं। बच्चों और परिवार की ओर ध्यान ले जाने का समय नहीं। वह कुसंगत मे पड़कर बिगड़ रहे हैं, यह देखने की फुर्सत नहीं। फिर जो धन कमा रहे हैं उसे इस्तेमाल करने का समय नहीं रहता, जो धन सुख के लिए कमाना शुरू किया था वह जान लेवा बन जाता है। उसको किसी जरूरतमन्द पर खर्च भी नहीं कर सकता।

इससे भी आगे धन कमाने में सब जायज़ नाजायज़ ढंग इस्तेमाल किए जाते हैं। बेईमानी, रिश्वत, कमजोरों, मज़दूरों पर जुल्म, किसी के हक का अपहरण इसी का परिणाम है। धीरे धीरे बिना मेहनत के धन प्राप्त करने की लालसा बढ़ जाती है। फिर घोटालों का दौर चलता है। बिना मेहनत के आया धन तबाही और बर्बादी लाता है। राजनीतिज्ञों की ज़िन्दगियाँ इसकी जीती जागती तस्वीर हैं।

धन की गुलामी ने मनुष्य को इतना पागल बना दिया है कि बड़ी बड़ी समाजें जब तक गरीब थीं, इनका नैतिक स्तर ऊंचा था, ज्यों त्यों धन आ गया, उसकी बर्बादी के मार्ग खुल गए। जब किसी संस्था में धन कम होता है तो त्याग से काम करने वाले सेवाकारी वर्कर होते हैं, पर धन आने से मुफ़तख़ोरों का मजमा लग जाता है और निस्वार्थ काम करने वालों को अपने रास्ते का कांटा समझकर निकाल दिया जाता है, उसके बाद ऐसी संस्थाओं की क्या दुर्दशा होती है, उसके नमूने आज की हर समाज या संगठन में मिलते है, क्योंकि आज धन का ही बोलबाला है।

सबसे बड़ा दुख तब होता है, जब धन के लालच में हमारे विद्या के मन्दिरों को भी ग्रास बना दिया जाता हैं। अब स्कूल कालिज खोलने या उनकी मैनेजमेन्टों की मैम्बरी लेने की होड़ लग जाती है। बच्चों की फीसें बेदर्दी से बढ़ाई जाती है। होस्टलों में नाजायज़ तरीके से पैसे लिए जाते हैं। बड़ी हैरानी होती है यह सुनकर कि कई स्कूलों कालिजों में दो नम्बर का हिसाब रखा जाता है और वह पैसा मैनेजमैंट द्वारा अपनी मर्जी से अपनी ऐश ईशरत पर खर्च किया जाता है। उससे जहां पढ़ाई का स्तर गिर रहा है वहां नैतिकता बिल्कुल ताक पर रखी जा रही है। धन कमाना जो सम्पन्न और सन्मानपूर्वक जीवन बिताने के लिए आवश्यक था वह हमारे पतन का कारण बन गया है। इतने निर्दोष काम को मनुष्य ने अपनी नीचता से भयंकर पाप बना दिया है। कहलाने वाले त्यागी वैरागी भी इसकी लेपट में फंस जाते हैं। एक एक जन जो अपने बच्चे की फीस मुआफ करवाने के लिए मिन्नतें करता देख गया था परन्तु संस्थाओं की बागडोर सम्भाल कर ऐसे जन स्कूलों कालिजों के विद्यार्थयों पर फीसों का असहनीय बोझ डालने वाले बन गए। किसी की गरीबी, असमर्थता अब उनकी समझ से बाहर है।

छोटा बच्चा जब मुंह मे मीठी चीज़ डालता है, तो यह साधारण बात है कि उसे अच्छा लगता है, और यदि यह सिलसिला चलता रहे और उसकी मीठा खाने

की इच्छा को नियन्त्रण में न रखा जाए तो वह धीरे धीरे मीठे का गुलाम बन जाता है और फिर चाहे उसे डायबटीज़ हो, चाहे डाक्टर मना करें, वह इस सुख को लेना चाहता है, परन्तु जीवन की परवाह नहीं करता। धीरे-धीरे बेवक़त मौत का शिकार हो जाता है।

इसी प्रकार किसीके भीतर नमकीन और चटपटी चीजों को खाने की लालसा बढ़ जाती है, यह भी किसी नशे से कम नहीं। अल्सर, बवासीर कुछ भी हो, बुख़ार हो, ज़ुकाम हो परन्तु नमकीन और चटपटी चीजें नहीं छोड़ सकता। आख़िर वही स्वाद-दार चीजों की गुलामी मनुष्य की जान ले लेती है। खाने के नशे में मनुष्य अपना वज़न बढ़ाता है, बेडौल और कुत्सित हो जाता है। अकारण ही दूसरों की खिल्ली, मजाक, अनादर और घृणा का निशाना बन कर रह जाता है। मन में सोचकर भी कि आगे से वह ऐसा नहीं करेगा, परन्तु एक नशई की तरह वही पदार्थ सामने आने पर मजबूर हो जाता है।

इस प्रकार मनुष्य पता नहीं किन किन नशों में मद मे चूर है, जो उसे तबाही की ओर पूरी रफतार के साथ ले जा रहे है।, उनसे छुटकारा पाना पहाड़ को उठाने से भी कठिन काम है।

इस कठिन काम को पूजनीय भगवान ने सुगम बनाया है, रास्ता दिखाया है, उपरोक्त सब प्रकार के नशों से सैंकड़ों जनों को बचाया हैं, शर्त यही है कि हमारे दिलों का योग उनसे हो और उनकी रोशनी में इन बुराईयों की भयानक तस्वीर दिखाई दे और उनका बल पाकर उनसे बचने के लिए संग्राम में पड़ सकें, फिर अपनी अपनी योग्यता के अनुसार हमारे बचाव का मार्ग खुल सकता है।

सुरजीत बराड़

प्रसन्न रहो

* सभी लोग अपने जीवन में न जाने क्या क्या ढूंडते रहते हैं, जीवन से न जाने क्या क्या पाने की आशा रखते हैं। यह सोचते हैं कि अगर हमे यह हासिल हो जाए, तो जीवन भर सुखी रहेंगे। लेकिन इस चक्कर में अक्सर छोटी छोटी खुशियां मुठठी से रेत की तरह फिसल जाती है।

* सदा प्रसन्न रहना आपके व्यक्तित्व को अधिक प्रभावशाली बना सकता है। जान पहचान वाले लोग किनसे मिलना पसन्द करते है, उनसे जो मुंह बनाए रखते हैं या उनसे जो प्रसन्न रहते हैं।

* प्रसन्न रहने के लिए आपके पास जो कुछ भी है, अच्छा घर, रहन सहन, परिवारिक सहयोग, अच्छा स्वास्थ्य, उनकी सराहना करना सीखें।

* दूसरों के लिए कुछ करें, तभी खुशी मिलेगी, यह काम चाहे किसी बूढ़े को सड़क पार करवाने का हो, किसी को बैठने की सीट देने का हो। वर्तमान को संवारिए, भविष्य स्वंय ही संवर जाएगा। जिन्दगी के हर पल का आन्नद लें, सदा खुश रहें और दूसरों को रखें।

योग्य नेतृत्व की अवश्यकता

हमारे देश में अप्रैल के महीने में ही 2 बड़ी घटनाएं हुई, जिन्होंने देश को एक डोर में पिरो दिया। पहली World cup जीतने की और दूसरी अन्ना हज़ारे के अन्दोलन की।

इन दोनों घटनाओं में जो बात सामने उभर कर आई है वह है सशक्त नेतृत्व। हमारी टीम में क्षमताओं की कमी नहीं थी, योग्य कप्तान भी मिले, परन्तु सारी टीम को एक सूत्र में बांधकर रखने, उनकी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उत्साहित करने की क्षमता कम थी। परन्तु जब से महिन्द्र सिंह धोनी ने कमान सम्भाली है, टीम की परफार्मैन्स निख़रती गई। इसका कारण कुशल नेतृत्व था। सदा शान्त रहने वाला, सबकी क्षमताओं को उभारने वाला, कठिन से कठिन परिस्थितियों में मान्सिक सन्तुलन न खोने वाला, समय के अनुसार फैसले बदलने वाला, अलोचनाओं को भी शान्त मन से स्वीकारने वाला, गल्ती होने पर सारी जनता के सामने क्षमा मांगने वाला, किसी के ग़ल्त खेल जाने पर भी उसे फिर चान्स देकर उत्साहित करने वाला, कठिन समय में सारी ज़िम्मेवारी अपने सिर पर लेने वाला हमारा यह कप्तान सर्वश्रेष्ट कप्तान बन गया। सर्वश्रेष्ट नेता वा रहनुमा बनने के सब गुण इस जन में दिखाई पड़ते हैं।

मास्टर बलास्टर तन्दूलकर जिन्हें क्रिकट का भगवान कहकर सम्मानित किया जाता है उन्हों ने कमाल का अपने कप्तान के विषय में लिखा वा बोला है, जबकि कप्तान उमर, तुजरबें में उनसे छोटा है। उनका मानना है कि अभी तक जितने भी कप्तानों के नेतृत्व में वह खेले हैं, उनमें महेन्द्रसिंह धोनी सर्वश्रेष्ट हैं। वे गज़ब की परिपक्वता रखते हैं। साथ ही परिस्थितियों को समझकर रणनीति बनाते हैं।

मुम्बई में पत्रकारों से बातचीत करते हुए तन्दूलकर साहिब ने कहा कि धोनी गेंदबाजों, बल्लेबाजों और टीम के सीनियर खिलाड़ियो से अलग राय लेते हैं और उनकी राय का सम्मान करते हैं। उन्होंने कहा कि धोनी हर परिस्थिति में शान्त रहकर निर्णय लेते है। यही मानविय खूबियां उन्हें बेहतरीन कप्तान बनाती हैं।

एक इतने सीनियर खिलाड़ी की ओर से सम्मान देना, धोनी के गौरव को भी बढ़ाता है।

धोनी का अपने कोच के साथ तालमेल भी उनकी एक बहुत बड़ी खूबी रही है।

अपने काम के प्रति इतने समर्पित कि 6 दिन बाद I.P.L. के मैच शुरू होने थे, वह कहते हैं कि वह अपने माता पिता के पास भी नहीं जा पाए, फोन पर ही उनसे आर्शीवाद लिया। वह कहते हैं कि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरे जनून से जुट जाने से आखिर सफलता मिलती है। मैं भविष्य की निस्बत वर्तमान पर फोक्स रखता हूँ। चुनौतियों को धैर्य से स्वीकार करता हूं। मैं सब की राय लेता हूं, फिर टीम के हित में जो सही हो, वही निर्णय लेता हूं। स्वस्थ अलोचनाओं का स्वागत करता हूं।

उन्होंने लोगों से अपील की कि वह अन्ना हज़ारे को वैसा ही समर्थन दें, जैसा उनहोंने टीम इंडिया को दिया है।

हमारा नमस्कार है ऐसे नेतृत्व को काश ऐसे नेता समाज के हर क्षेत्र में हो जाएं तो आज हमारा देश, हमारी समाज, हमारी संस्थाएं जिस अधोगति मे चली गई हैं, वह भी टीम इंडिया की तरह उभर सकें।

सुरजीत बराड़

लोकतन्त्र की विजय

लगभग 63 वर्ष पूर्व हमारा देश आज़ाद हुआ। अंग्रेजों के अत्याचार से दुखी भारतवासी आज़ादी तो चाहते थे, परन्तु अपनी किस्मत पर अन्धविश्वास ने उन्हें भीरू बना दिया था कि वह अत्याचारियों का विरोध करने का बल नहीं रखते थे। दूसरी ओर स्वार्थ हम भारतवासियों की नस नस में बसा हुआ होने के कारण उन अत्याचारियों के साथी बन जाते रहे और जो लहर चन्द देशभक्तों द्वारा उठाई जाती उसको ही अपने धोखे, कपटता वा देशद्रोहिता से अथाह हानि पहुंचाते रहे हैं। एक ओर महारानी लक्ष्मी बाई, तांत्या टोपे, जैसे बहादुरों ने अपनी जान कुर्बान कर दी, दूसरी ओर स्वार्थी भारतवासी अंग्रेजों से अपना स्वार्थ सिद्ध करके, जागीरें लेकर, उनकी योजनाओं को धाराशाही करते रहे। इन सब की स्वार्थ लोलुपता ने हमारी आज़ादी को 100 वर्ष पीछे धकेल दिया।

फिर युग ने पल्टा खाया। कुछ नौजवान देशभक्त उठे, जिन्होंने तलवार का तलवार से जबाब देना चाहा और सुभाष चन्द्र बोस ने मुक्ति फौज की स्थापना की, शहीद भक्त सिंह जी जैसे नौजवानों ने अपनी जवानियां वार दी और आज़ादी की मिशाल को जगते रखा। दूसरी ओर अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी पैदा हुए, दुबले, पतले, और शर्मीले, लेकिन हृदय इतना विशाल दया से पूर्ण कि उन्होंने आजादी की इस लड़ाई में अहिंसा की मिशाल जगाकर, सारे देश को एक नई राह दे दी। धीरे धीरे उनके अन्दोलन, उनके अनशन, उनका अहिंसा पर अटूट विश्वास बढ़ता गया, और अनथक कुर्बानियां देकर महानुभावों ने हमें आज़ादी का तोहफा दिया। ब्रिटिश साम्राज्य जिसके विषय में कहा जाता था कि उनके यहां सूर्यास्त नहीं होता, क्योंकि पूर्व, पश्चिम में उनका सर्वत्र राज था, परन्तु हमारे देश में उनका सूर्य अस्त हो गया।

आज़ादी मिली, अंग्रेज लुटेरों और अत्याचारियों के चंगुल से भारत आज़ाद हो गया, परन्तु धीरे धीरे एक और लुटेरों की जमायत खड़ी हो गई। जनता ने जिनको अपना प्रतिनिधि चुनकर सरकार बनाने के लिए भेजा, वह जनता को तो भूल गए, परन्तु उनके स्वार्थ सीमा पार कर गए। बेगानों को तो सहन करना पड़ा था, परन्तु घर वाले ही डाकू बन गए। पहले लाखों के घोटाले, फिर करोड़ो के घोटाले, फिर कई कई हज़ार करोड़ों के घोटाले। यह घोटाले हररोज़ अख़बारों की सुर्खियां बन गई, परन्तु लोग जैसे अंग्रेजों के जमाने में किस्मत समझकर सब कुछ सहते गए। अब भी सहने के आदी हो गए। मीडिया के लिए अपनी T.R.P. बढ़ाने और मसाले लगाकर ख़बरे सुनाने में ही रूचि थी, किसी के पास इससे छुटकारा पाने की कोई सोच नहीं थी।

ऐसा लगने लगा था कि महात्मा गांधी के सिद्धन्तों का ढोल पीटने वाले उनकी फोटो नोटों पर छापकर ही उन्हें श्रद्धांजली दे रहे हैं। उनके सिद्धान्त लोप हो चुके हैं। परन्तु उनके समय के एक सिपाही ने क्रिश्मा कर दिखाया। अन्ना हज़ारे जो दुनियां की नज़र में एक मामूली इन्सान थे, अब लाखों करोड़ों जनों के हीरो बन गए। उन्हेंने सरकार के पास पहुंचकर भृष्टाचार ख़त्म करने के लिए कनून बनवाने की प्रार्थना की, बातचीत हुई, परन्तु कोई ठोस नतीजा न देखकर उन्होंने अपने कुछ कर्मठ ईमानदार और सच्चे देशभक्त साथियों को लेकर ऐलान कर दिया कि मैं अनशन पर जाऊंगा और तब तक यह ब्रत नहीं तोड़ूंगा जब तक लोक पाल बिल के लिए सरकार नहीं मानेगी। आज 9.4.2011 को उनके अनशन का चौथा दिन था। उनकी इस तड़प ने सारे भारत को हिला दिया। दिल्ली में जन्तर मन्तर के स्थान पर हज़ारों लोग इकट्ठे होने लगे। Web site पर, Facebook पर

Tweet पर लाखों लोगों के उनको संदेश आए कि हम तुम्हारे साथ हैं। हौसला बढ़ता गया, लोगों में नारों का, गानों का, देशभक्ति की भावना का समुन्द्र ठाठें मारने लगा। एक आध राजनैतिक नेता ने आकर अपनी रोटी सेंकनी चाही, उन्हें बाहर से ही भगा दिया, एक नेता को कमेटी का अध्यक्ष बनाना चाहा उन्होंने नकार दिया कि जो स्वंय भ्रष्ट है, वह भ्रष्टाचार पर नकेल क्या डालेगा। ऐसी लहर उठी, कि जनता का आना थम नहीं रहा था। पहले World cup ने भारत को जैसे एक कर दिया था, अब अन्ना हज़ारे ने एकता की एक और मिसाल क़ायम कर दी।

एक स्त्री ने लिखा हुआ था कि यदि मेरी पति रिश्वत के पैसे से मेरे लिए साड़ी लाऐंगे, तो मैं नहीं पहनूंगी। एक बच्चे ने लिखा था कि यदि मेरे पिता रिश्वत लेंगे तो मैं न स्कूल जाऊंगा और न ही खाना खांऊगा। वाह! क्या सोच बदल रही है। यह विकास की ओर कदम है। लोक पाल बिल के लिए सरकार ने मजबूत कदमों से लिखकर सहमति दे दी। अन्ना हज़ारे की पार्टी की सब मांगे खुशी खुशी मान ली गई। मानसून सत्र में यह बिल पेश किया जाएगा, और अवश्य पास होगा। इसके पास होने से भ्रष्टाचारियों पर नकेल कसी जाएगी। उसमें शीघ्र और सख़्त सज़ा का प्रावधान होगा। 10 मैम्बर जो कमेटी में रखे गए है, वह ईमानदारी के लिए जाने जाते हैं। लोकतन्त्र की यह आज़ादी के बाद बहुत बड़ी जीत है। देश सब ओर से विकास की ओर बढ़ रहा है, परन्तु भ्रष्टाचार इसकी जड़ें खोखली कर रहा है।

इस अन्दोलन से ईमानदारी जगमगाई है, भृष्टाचार हारा है। बेशक यह भृष्टाचार को खत्म करने की ओर एक बड़ा संकेत है। परन्तु बुराई को जड़ से उखाड़ना इतना आसान नहीं होता, परन्तु कम से कम उस ओर एक सशक्त कदम तो बढ़ा है। अन्ना ने ऐसा मुद्दा उठाया है, जिसको लेकर जनता जाग्रित तो थी, लेकिन उसके ख़िलाफ आगे आने को तैय्यार नहीं थी। भृष्टाचार उच्च ओहदों पर बैठे राजनेताओं के खून में समा चुका है। जो इसके विरूद्ध आवाज उठाता था, उसे कुचल दिया जाता था। सत्ताधारी अपने स्वार्थ में इतने अन्धे हो चुके हैं कि उनके इन्साफ वा ज़ुल्म में कोई फर्क नहीं रह गया था, उन्होंने देशवासियों को मूक दर्शक समझ रखा था, इसीलिए राजनीति में पिता, पुत्र को भी हराम की कमाई के लिए आगे ले आते थे।

अन्ना ने जिस निस्वार्थ भाव से देशवासियों के ज़मीर को जगाया है, वह काबिले तारीफ है। जिस साधाराण तरीके से अन्दोलन शुरू किया, परन्तु यह अन्दोलन पूरे भारत में चिंगारी की तरह फैल गया। हर भारतिय को ऐसे अन्दोलन का इन्तज़ार था, इसीलिए तन, मन, धन से इस जनून का हिस्सा बनने के लिए, बहुत से प्रदेशों से, दूर दूर से जन समूह उमड़ा उनका उत्साह देखते ही बनता था।

हर दिल में भृष्टाचार से दुख की आग दबी पड़ी थी जिसे केवल चिंगारी की अवश्यकता थी, वह चिंगारी अन्ना हज़ारे बनें। नौजवानों ने जो उत्साह दिखाया, यदि वह अपनी ज़िन्दगी में ईमानदार रहने की कसम खा लें, तो हम भारत के उज्जवल भविष्य की आशा कर सकते हैं और अब जो नेता कुर्सी से उठ नहीं सकते, अच्छी तरह बोल नहीं सकते, सुन नहीं सकते, लेकिन धन लोलुपता वा ऐशोआराम के लालच में कुर्सियों से चिपके हुए हैं, उनकी कुर्सियां नीचे से खिसक जाएंगी और उनके स्थान पर उत्साही, ईमानदार, मेहनती नौजवान लेंगे।

अन्ना हज़ारे तभी सफल हुए, जब उनके साथ सारे मुल्क की ताक़त जुट गई। जब स्वार्थ के लिए हम बिख़रे रहते हैं, तो कोई भी उच्च लक्ष्य पूरा नहीं कर सकते। यह विकास का क्रम जो चल निकला है यह आगे बढ़ेगा, हमारे देश, हमारे प्रदेशों, हमारी समाजों, हमारी संस्थाओं में इन्कलाब आएगा।

"हम न होंगे क्या हुआ दुनियां तो देखेगी वह दिन"

सुरजीत बराड़

साहस की जीवटता

भारतीय पुलिस सेवा में, पहली भारतीय उच्चपदासीन महिला अधिकारी की गाथा है जिन्होंने अपनी संकल्प शक्ति, कर्तव्य के प्रति निष्ठा, सहानुभूति, नवीनता व कभी हार न मानने वाले जज़्बे के बल पर पूलिसिंग की मानवीय पद्धतियों का नेतृत्व किया। 'भारत की सर्वाधिक प्रशंसित महिला' के रूप में चुनी गई किरण बेदी एक सुविख्यात व सम्मनित पुलिस अधिकारी रही हैं, जिन्हों अनेक पुरस्कार व सम्मान पाए, हैं, जिसमें सरकारी सेवा के लिए प्रेरित रमन मैग्सेसे पुरस्कार भी सम्मिलत है। इस बेस्ट सेलर पुस्तक संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण किरण बेदी के बचपन से वर्तमान जीवन यात्रा का रोचक विवरण देने के साथ-साथ यह भी बताता है कि उन्होंने कार्यकाल समाप्त होने से दो वर्ष पूर्व ही सेवानिवृत्ति क्यों ले ली, यदि वे दिल्ली पुलिस कमिश्नर नियुक्त होतीं तो दिल्ली पुलिस का नेतृत्व कैसे करतीं व उनकी वर्तमान योजनाएं क्या हैं? किरण ने अपने पूरे करॅिर (वे 1972 में भारतीय पुलिस सेवा में आई) के दौरान नवीनता के साथ सामने आने वाली चुनौतियों का सामना किया, चाहे वह पुलिस व्यवस्था हो, जेल प्रबंधन हो या फिर प्रशिक्षण का उन्होंने देश-विदेश मे करोड़ों व्यक्तियों द्वारा प्रशंसा व सम्मान अर्पित किया? किंतु साथ ही उन्हें ताकतवर लोगों द्वारा दी गई बाधाओं का भी सामना करना पड़ा। उन्होंने पूरे दृढ़ संकल्प के साथ अपने विपक्षियों का सामना किया और हर घटना के बाद पहले से कहीं सशक्त रूप में सामने आई। उनके जीवन की उपलब्धियां इतिहास के सुनहरे पृष्ठों में अंकित हैं। उन्होंने सहयोगात्मक व सुधारात्मक अपराध निवारण नीतियां अपनाई। यहां तक कि उच्चपदस्थ अधिकारी भी उनकी साहसिक कार्यशैली के कायल थे। वे उन लोगों में से हैं जो जमीन पर मजबूती से पांव टिकाने के साथ-साथ, अपने दिल और दिमाग से करुणा व न्याय का साथ देते हैं। इस संशोधित संस्करण में, वे उन्नत व गांधीवादी विचारधारा युक्त उन योजनाओं को प्रकट करती हैं, जिन्हें वे दिल्ली पुलिस कमिश्नर बनने पर प्रयोग में लातीं। इसके अतिरिक्त यह भी पता चलता है कि वे किस तरह अपने समय की स्वामिनी बनकर समाज को कुछ देने की प्रक्रिया में जुटी हैं। अपने सेवानिवृत्ति के एक सप्ताह के भीतर ही उन्होंने 'ई-पोर्टल' लॉन्च किया, यदि पुलिस किसी व्यक्ति की शिकायत दर्ज करने से मना करता है तो वहां वह व्यक्ति या कोई भी अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। इसके बाद एक और 'ई-पोर्टल' सामने आया जो पुलिस समुदाय के कल्याण के लिए काम करेगा। उन्होंने अपने दो गैर-लाभकारी संगठनों में स्वयंसेवी कार्यो के लिए, वक्ता फीस, पुरस्कार धन-राशी पुस्तकों से मिली रॉयल्टी व मानदेय आदि दान कर दिया है। वे इन दोनों संस्थाओं से पूरी गहराई से जुड़ी हैं, जो कि प्रतिदिन 11,000 लोगों तक अपनी सेवाएं पहुंचाती हैं। वे अपने जीवन पर बने वृत्तचित्र (जिसमें श्रोताओं से संवाद भी शामिल हैं) की स्क्रीनिंग में भी शामिल रहीं। अब अन्ना हज़ारे के अन्दोलन में भी उनके साथ खड़ी हुई हैं।

जीवन प्रसंग

कपल डोनर : 65 बार एक साथ रक्तदान-1

एक दंपती के तौर पर सबसे ज्यादा बार रक्तदान करने पर मोहाली के सरदार बलवंत सिंह और पत्नी जसवंत कौर का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में लिखने की प्रक्रिया चल रही है। 19 साल पहले एक जोड़े के तौर पर रक्तदान करने की शुरूआत करते हुए इन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि एक दिन दोनों एक साथ रक्दान करने वाले अनोखे जोड़े बन जाएंगे। 2005 में कपल डोनर के तौर पर इनका नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाड्र्स में दर्ज किया जा चुका है।

दोनों ने 7 अप्रैल 1991 को वर्ल्ड हेल्थ डे पर पहली मर्तबा एक साथ रक्तदान किया। उसके बाद साल में चार बार खून देने का यह सिलसिला आज तक नहीं थमा है। अब तो इन दोनों का कनाडा में रह रहा बेटा अमनदीप सिंह 31 दफा और बेटी संदीप कौर 27 दफा रक्दान कर चुकी है। दुनिया में रक्तदान करने वालों मे बलवंत सिंह और जसवंत कौर इसलिए विरले हैं क्योंकि इन दोनों की पहचान कपल डोनर के तौर पर है। लिम्का बुक में इन दोनों का नाम कपल डोनर के तौर पर सबसे ज्यादा ब्लड डोनेट करने वालों के तौर पर दर्ज है। दोनों 1991 से लेकर अब तक जोड़े के तौर पर65 बार रक्दान कर चुके हैं। पहले जसवंत कौर ने अकेले ही रक्तदान किया। फिर 1991 में उन्होंने अपने पति बलवंत सिंह को भी इस नेक काम के लिए प्रेरित किया। इसके बाद अब यह दोनों साथ साथ रक्दान करते हैं। वे कहते हैं, बिना कुछ खर्च किए मन को शांति मिल जाए और दूसरों की जान बच जाए वो जिंदगी में इससे बड़ी तस्सली क्या हो सकती है। इनके लिए रक्दान सिर्फ सैटिस्फैक्शन का ही जरिया नहीं है। दोनों ने दूसरे लोगों को भी इस अभियान से जोड़कर रक्तदान को एक मिशन की शक्ल दे दी है। जसवंत कौर बाबा शेख फरीद ब्लड डोनर्स काउंसिल नाम की संस्था के तहत लोगों को इस अभियान से जोड़ रही हैं। इस संस्था ने 90 से ज्यादा रक्दान शिविर में 13 हजार यूनिट रक्त एकत्र किया है। इस संस्था के साथ चार हजार ब्लड डोनर जुड़े हैं।

दीजीए जीवनसाथी का साथ-2

जीवनसाथी यानी ताउम्र आपके साथ रहने वाला एक भरोसा। जिसके साथ की जरूरत आपको हर पल होती है। चाहे वो प्रोफेशनली हो या रिश्तों को लेकर। चाहे वो मौन रहकर एक-दूसरे को दिया जाने वाला समर्थन हो या छोटे-छोटे तोहफों के जरिए। कभी मुस्कुराहट के जरिए तो कभी खिलखिलाहट से। कभी चुप रहकर तो कभी कहकर। एक ऐसा रिश्ता जो पूरे विश्वास के साथ हर पल आपका साथ महसूस करना चाहता है। तो क्यों न आज से ये तय कर लिया जाए कि वो सब जो आप समझते हैं उन्हें एक दूसरे के लिए जताएं भी। वो सारी संवेदनाएं, भावनाएं जो उनके लिए आपके भीतर हैं उन्हें बोलकर बताया जाए। आपस में एक-दूसरे को अहसास दिलाया जाए कि यदि वे खुश हैं तो घर में खिलखिलाहट है। जताया जाए कि हमारे बेहतर आज के लिए तुम्हारे कल का सहयोग कीमती रहा। तो आज से उस भरोसे को और मजबूत कीजिए। दीजिए जीवनसाथी का साथ।

शुभ संग्राम

कल्याण :- 20 मार्च 2011 को श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमती सुरजीत बराड़ अपने बेटे डा० देव अनुरूप बराड़, अपनी बेटी डा० नम्रता, अपने दोहते डा० प्रतीक और अपनी पोती फेथ बराड़ और पोते कल्याण बराड़ अपनी पुत्र-वधु पाईपर बराड़ और राहत, डा० अरूण, सब मिलकर अपने गांव कल्याण में पहुंचें। सबने पहले देव समाज के यादगारी मन्दिर मे जाकर दर्शन किए और पू० भगवान की छवि के आगे फूल रखकर सबने प्रणाम करके अपनी श्रद्धा की तृप्ति की। वहां के स्कूल को देखा, फिर कुछ धर्म सम्बन्धियों के घरों में जाकर थोड़ी थोड़ी देर के लिए मिले, सबको ही मिलकर बहुत खुशी हुई। अपने बजुरगों के निवास स्थान को भी देखा। वहां से सबको मोगा वा जलालबाद अपने पुराने फार्म की ओर रवाना करके श्रीमान जी, श्रीमान जगदीष प्रसाद जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और पंडित तेजराम जी को साथ लेकर कल्याण से मानसा पंहुच गए।

मानसा से रात को एक सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें 30-35 के करीब जन आए। यह सभा तेज राम जी की बहन के घर की गई। सभा में बताया गया कि सब मनुष्य ही सुखी रहना चाहते हैं, परन्तु सुखी रहने की कला का मनुष्य को पता नहीं। सुखी रहने के लिए चार ज़रूरी बातों का ब्यान किया गया। सेहत, धन, शिक्षा और उच्च जीवन। सबके विषय में विस्तार से बताया गया। पर का ख़्याल वा पर के लिए कुछ किए बिना मनुष्य सुखी नहीं रह सकता। बहुत सुन्दर उदाहरण पेश किए गए। यह सभा काफी प्रभावशाली थी। हाजरीन धन्य धन्य अनुभव कर रहे थें। एक और सभा डा० सुबोध गुप्ता जी के घर में की गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई।

23.3.2011 :- सुबह एक और सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। पहले जगदीष प्रसाद जी ने भजन का गान किया। सभा में धर्म के विषय में बताया गया। इसके विषय मे बहुत अन्धेरा है। कोई पूजा पाठ आदि को ही धर्म समझता है, पर धर्म यह नहीं। धर्म अच्छे, नेक, उच्च वा सेवाकारी इन्सान बनने का नाम है। अच्छा बनने के लिए पहले, खराब, नीच बातें, 8 पाप छोड़ने ज़रूरी हैं। इनको छोड़े बिना इन्सान अच्छा नहीं बन सकता। चार भाव पैदा किए बिना कोई मनुष्य धर्मवान नहीं बन सकता। जिसे :-

(1) दूसरों के गुण नज़र नहीं आते (2) उपकारियों के उपकार नज़र नहीं आते, (3) जिसमें दया का भाव नहीं (4) जिसको अपनी कोई कमी वा दोष नज़र नहीं आता, वह न अच्छा इन्सान बन सकता है, न अच्छा बाप वा बेटा, न अच्छा भाई वा बहन, न अच्छा पति वा पत्नी, न अच्छा अफसर वा नौकर, किसी सम्बन्ध में अच्छा नहीं बन सकता। इस निराली संगत ने अधिकारी मनुष्यों की मिथ्या वा पाप छुड़ाकर, उच्च भाव पैदा करने का काम किया है, इससे जुड़ कर नेक बनने के राह पर पड़ सकते हैं।

कुछ हितकर बातचीत के बाद यह साथी मल्लेका पहुंच गए।

मल्लेका शाम 8 बजे :- यहां पहली सभा श्रीमान बलबहादर सिंह जी ने करवाई। सभा हाल श्रोतागण से भरा हुआ था। 80-85 के लगभग हाज़री थी। सभापति जी ने बताया कि नेचर नियम बद्ध है। सेहत के नियमों को जानकर मनुष्य ने वैक्सीन की खोज की है। पोलिया और ऐसी कई बिमारियों का लगभग ख़ात्मा हो चुका है। परम पू० भगवान देवात्मा ने जो धर्म की शिक्षा दी है, वह नेचर के नियमों पर आधारित है। हम सुख लेना चाहते हैं, पर सुखों के नियमों को पूरा नहीं करते। हम मान सत्कार प्राप्त करना चाहते हैं, यह भी नेचर के नियमों द्वारा ही प्राप्त होते हैं। नेचर का एक महान नियम श्रद्धेय पी० वी०

कनल जी ने लिखा हैं कि दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जो तुम अपने लिए दूसरों से उमीद रखते हो। सच्चा सुख या उच्च सुख देवात्मा के दर के साथ जुड़कर प्राप्त होता है। जो होश, जो समझ, जो ज्ञान, इस दर से प्राप्त होता है, वह और कहीं प्राप्त नहीं होता। इस दर से सच्चा जीवन मिलता है, इससे परे होना बर्बादी है। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फिर बहुत प्रभावशाली ब्यान किया।

22.3.2011 :- सुबह 8.30 बजे। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि जीवित वा मृत प्राणी में अन्तर है। मनुष्य ने शरीर की मौत के नियम जान लिए हैं, देव धर्म बताता है कि आत्मा भी बिमार होती है, कमज़ोर होती है। शारीरिक और आत्मिक मृत्यु के नियम सब के लिए एक हैं। आत्मिक तन्दरुस्ती का एक नियम यह है कि गुणधारियों के गुण नज़र आएं और उनसे उत्साह वा उच्च प्रेरणाएं मिले। जब तक मनुष्य को अपने से महान नज़र आते रहते हैं, तब तक आत्मा जिन्दा रहती है। गुरू महाराज फरमाते हैं, कि धर्म बिना सब मनुष्य पशु के स्तर पर ही जीवन बिताते हैं। बल्कि पशुओं से भी नीच जीवन व्यतीत करते हैं। महात्मा बुद्ध की महानता का संक्षेप वर्णन किया। बहुत ज़ोर देकर समझाया गया कि गुण चिन्तन के साधनों द्वारा श्रद्धा भाव बढ़ाते रहना ज़रूरी है। श्रद्धा के मरने से आत्मा मौत का रास्ता पकड़ता है। दो जनों ने गुणधारियों के गुणों का ब्यान किया।

22.3.2011 रात 8.30 बते :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के करवाई। सभा में 80 के करीब जन शामिल हुए। सम्बन्ध तत्व के महत्व के विषय में वर्णन करते हुए सभापति जी ने बताया। आत्मा निर्लेप नहीं है, सम्बन्धी माया नहीं हैं। हक़ीक़त में बेजान सम्बन्धियों के साथ भी अच्छे व्यवहारों से जीवन संवरता है। हर व्यवहार से हमारे धर्मी वा पापी होने की परख़ होती है। देवात्मा सत्गुरू ने सम्बन्धों में ही धर्म के व्यवहार करने के योग्य इन्सान बनाए हैं। माता पिता के उपकारी वा महान रूप पर ज़ोरदार शब्दों पर रोशनी डाली। स्वार्थ सम्बन्धों में कड़वाहट वा ज़हर भरता है। सुन्दर दृष्टांतों द्वारा अपना आप न्यौछावर करने वाले बहन भाईयों के त्याग वा कुर्बानो की महिमा बताई गई। सभा में बार बार सभापति जी जोर से भगवान देवात्मा की महिमा महसूस करते रहे। गुरू महाराज का शुक्रिया अदा किया।

20.3.2011 :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। श्रीमान जी ने पहली सभा को संक्षेप में दुहराया। फरीद जी ने फरमाया है "जो सिंर सांई न निवै, सो सिर कप उतार" आम तौर पर अमीरों को विद्या की क़दर नहीं होती। वह विद्वानों के आगे नहीं झुक सकते। श्रद्धा वहीन विद्यार्थी अपने उपकारी अध्यापिकों के ग़ल्त नाम रख लेते हैं। जो व्यक्ति धर्म पाना चाहते हैं, उनके आगे महान व्यक्तियों के जीवनों के नमूने होने चाहिए। श्रद्धावान जन को पशु पौधों के महान गुणों को देखना चाहिए। श्रीमान जी ने श्रद्धेय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी कर्मचारी देव समाज के जीवन के कई पहलु श्रद्धा से भरकर ब्यान किए।

20.3 2011 शाम 4 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई यह सभा ढाणी में हमारे साथी सेवक श्रीमान बलदेव सिंह जी के घर में करवाई। उच्च संगत मे बैठकर हमारे पाप, मिथ्या विश्वास वा अनुचित दुख दूर होते हैं, इस पर ब्यान किया। उच्च संगत में हमारी सब प्रकार की रक्षा होती है। सभापति जी ने अपने निजी अनुभवों का भी ब्यान किया। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपने घर में आए सब जनों की चाय, दूध आदि से सेवा की।

23.3.2011 – शाम 8.30 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें 70 - 75 जनों के लगभग हाजरी थी। इसमें बताया कि धर्म सम्बन्धों में है। यह तभी सम्भव है यदि सम्बन्धों का आधार उच्च भाव हों। स्वार्थ भाव नीच भाव है, इससे जीवन का नाश हो जाता है। उच्च भाव अर्थात हमदर्दी, प्यार, शुक्रगुज़ारी, पर के हित की भावना मुख्य

होनी चाहिए हैं। पर के ध्यान में आत्म हित है। गुरू महाराज के प्रभावों के बगैर न आत्मा नज़र आता हैं, न स्वार्थ असल रूप में बुरा लगता है। स्वार्थी मनुष्य दूसरों को चीज़ वा वस्तु ही समझता है। उच्च भाव दूसरों का हक, दूसरों का दुख, सुख, अपमान दिखाते हैं। दूसरों का लाभ हानि दिखाते हैं। दूसरों का हित करने के लिए प्रेरित करते हैं। काश! गुरू हमाराज के उपकार वा उनके दान का कर्ज़ा हम महसूस करते रहें और उसे उतारने के वलवले बढ़ सकें। सभापति जी ने अपने ब्यान में कई हृदय स्पर्षिय घटनांए ब्यान की।

24.3.2011, सुबह 8.30 बजे यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में 60 के करीब हाज़री थी। भजन " मेरे सत्गुरू, मेरे भगवन मुझे तुमने बचाया है"। सभापति जी ने बताया कि पशु आंखें रखकर भी बहुत कुछ देख नहीं सकता। वह अपने सीमित ज्ञान के Shell में ही बन्द रहता है और इस विषय में पूर्ण अबोधी है। जिन विषयों में मनुष्य अज्ञानी है, उसका उसे बोध नहीं। जैसे मनुष्य लोहे के अण्डे में कैद है। यह नीच भावों की कैद है। कुछ उच्च भावधारी, ईमानदार व्यक्तियों की घटनाएं बताई। एक ईमानदार व्यक्ति ने नोटों का भरा बैग वापिस किया। एक स्त्री को जेवरों का भरा बैग मिला, जो उसने वापिस किया। एक महान व्यक्ति ने करोड़ के करीब बहन से मिले पैसे भले काम में लगा दिए। ऐसे महान व्यक्ति मनुष्य को नज़र नहीं आते, इस पक्ष में मनुष्य अन्धा है। श्रद्धा के बिना महान व्यक्ति नज़र नहीं आते। श्रद्धावहीन जन श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी को महान नही देख सकता। धर्म उच्च भावों से पैदा होता है। श्रीमान नौध सिंह जी वा श्रीमान राम सिंह जी की घटनांए बताई। उनके दान एकत्र करने की तपस्या के विषय मे बताया। कुछ शुक्रगुजारी के विषय में बताया।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts